

# सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी की काव्य प्रतिभा एवं लोकप्रिय रचनाएँ

नीरज कुमारी

एम.ए. हिंदी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

---

## सार

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हिन्दी के छायावादी कवियों में कई दृष्टियों से विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। निराला जी एक कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार और कहानीकार थे। उन्होंने कई रेखाचित्र भी बनाये। उनका व्यक्तित्व अतिशय विद्रोही और क्रान्तिकारी तत्त्वों से निर्मित हुआ है। उसके कारण वे एक ओर जहाँ अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तनों के सृष्टा हुए, वहाँ दूसरी ओर परम्पराभ्यासी हिन्दी काव्य प्रेमियों द्वारा अरसे तक सबसे अधिक गलत भी समझे गये। उनके विविध प्रयोगों— छन्द, भाषा, शैली, भावसम्बन्धी नव्यतर दृष्टियों ने नवीन काव्य को दिशा देने में सवाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

---

## परिचय

महाकवि, महामानव और महाप्राण जैसे विरुदों से सम्मानित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' वास्तव में अपने नाम के ही अनुरूप निराले रचनाकार थे। वे हिन्दी साहित्याकाश के सबसे देदीप्यमान नक्षत्रों में से एक थे। इस महान साहित्यशिल्पी का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर में २१ फरवरी, १८६६ को उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के मूल निवासी पंडित रामसहाय त्रिपाठी के घर हुआ जो उस समय मेदिनीपुर के राजा की नौकरी कर रहे थे। बचपन में ही उनकी माता का देहान्त हो गया था। सैनिक स्वभाव वाले पिता के कठोर अनुशासन में बालक सूर्यकांत का लालन-पालन हुआ।

उनकी प्रारम्भिक शिक्षा बाँग्ला और संस्कृत में हुई। दसवीं की परीक्षा पास करने के उपरांत स्वाध्याय द्वारा बाँग्ला, संस्कृत, अंग्रेजी आदि कई भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। इस बीच मनोहर देवी से उनकी शादी हो चुकी थी, उन्हीं के प्रभाव स सूर्यकांत जी ने हिन्दी पर अधिकार प्राप्त किया और उसमें कविता लिखना शुरू किया। परंतु कवि सूर्यकांत की प्रसिद्धि देखने का मौका मनोहर देवी को न मिल सका, उससे पूर्व ही एक पुत्री और एक पुत्र को छोड़कर वे स्वर्गवासी हो गयी थीं।

पिता की मृत्यु के बाद कुछ समय तक मेदिनीपुर राज्य की नौकरी करने के बाद 'निराला' जी ने बंगाल छोड़ दिया और लखनऊ आ गये। यहाँ भी कुछ समय रहकर वे इलाहाबाद के दारागंज मुहल्ले में आकर रहने लगे जहाँ इनके जीवन का अधिकांश समय गुजरा। साहित्य-सृजन के अलावा जीविकोपार्जन के लिये विभिन्न प्रकाशनों में प्रूफ-रीडर के तौर पर काम किया और 'समन्वय' नामक पत्रिका का संपादन भी किया। अपने विद्रोही स्वभाव तथा अपारंपरिक लेखन के कारण सृजनकर्म से उन्हें कभी पर्याप्त आमदनी न हुई। इसी अवस्था में उन्होंने किसी तरह अपनी पुत्री सरोज का विवाह किया, परंतु केवल एक वर्ष बाद ही उसकी मृत्यु हो गई, इसी कारण ६ अक्टूबर १८९६ को 'सरोजस्मृति' नामक कविता अस्तित्व में आई जो हिन्दी का अब तक का सर्वश्रेष्ठ शोकगीत माना जाता है।

आर्थिक विपन्नता की हालत में भी उनके द्वारा स्वयं कष्ट सहकर भी दूसरों की यथासंभव सहायता करने के अनेक प्रसंग उनके सही अर्थों में महामानवीय चरित्र को उद्घाटित करते हैं। सारा जीवन दुख और तकलीफों से जूझते 'निराला' अंतिम समय में अध्यात्म की ओर झुक गये थे। उनकी इस समय लिखी कविताओं में यह पक्ष उभर कर आया है। कहा जाता है कि मृत्यु से पूर्व वे कुछ विक्षिप्त से भी हो गये थे। १५ अक्टूबर १९६१ को जूही की कली, तुलसीदास, राम की शक्ति-पूजा, सरोज-स्मृति, वह तोड़ती पत्थर, रानी और कानी, कुकुरमुत्ता (कवितायें), देवी, लिली, चतुरी चमार, कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा (गद्य रचनायें) जैसी अनेक कालजयी कृतियों के इस अमर रचनाकार ने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया।

निराला वास्तव में ओज, औदात्य एवं विद्रोह के कवि हैं। उनपर वेदांत और रामकृष्ण परमहंस तथा विवेकानंद के दर्शन का प्रभाव रहा है। यही कारण है कि उनकी कविताओं में रहस्यवाद भी मिलता है। निराला अकुंठ एवं वयस्क श्रंगार दृष्टि तथा तृप्ति के कवि हैं। वे सुरुख और दुरुख दोनों को भरपूर देख कर तथा उससे ऊपर उठ कर चित्रण करने की क्षमता रखते हैं। उनकी कविता में बौद्धिकता का भरपूर दबाव और तर्क संगति है। अपने युग का विषय, यथार्थ और उससे उबरने की साधना उनकी तीन प्रबंधात्मक दीर्घ कविताओं दृ तुलसीदास, सरोजस्मृति और राम की शक्तिपूजा में प्रकट हुई है। इसी रचना से यह उद्धरण देखें

रवि हुआ अस्त  
ज्योति के पत्र पर लिखा  
अमर रह गया राम-रावण का अपराजेय समर  
आज का तीक्ष्ण शर-विधृत-क्षिप्रकर, वेग-प्रखर,  
शतशेलसम्वरणशील, नील नभगर्जित-स्वर,  
प्रतिपल - परिवर्तित - व्यूह - भेद कौशल समूह  
राक्षस - विरुद्ध प्रत्यूह, - क्रुद्ध - कपि विषम हूह,  
विच्छुरित वह्नि - राजीवनयन - हतलक्ष्य - बाण,  
लोहितलोचन - रावण मदमोचन द्र महीयान

यह उद्धरण देखें-

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाये,  
बायें से वे मलते हुए पेट को चलते,  
और दाहिना दया दृष्टि-पाने की ओर बढ़ाये।  
भूख से सूख ओठ जब जाते  
दाता-भाग्य विधाता से क्या पाते? कृ  
घूँट आँसुओं के पीकर रह जाते।  
चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,  
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए!

### कार्यक्षेत्र

निराला जी ने 1918 से 1922 तक महिषादल राज्य की सेवा की। उसके बाद संपादन स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। इन्होंने 1922 से 23 के दौरान कोलकाता से प्रकाशित शसमन्वयश का संपादन किया। 1923 के अगस्त से श्मत्वालाश के संपादक मंडल में काम किया। इनके इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय और वहाँ से निकलने वाली मासिक पत्रिका शसुधाश से 1935 के मध्य तक संबद्ध रहे। इन्होंने 1942 से मृत्यु पर्यन्त इलाहाबाद में रह कर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य भी किया। वे जयशंकर प्रसाद और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने कहानियाँ उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेषरूप से कविता के कारण ही है।<sup>ख२</sup>

## रचनाएँ

निराला की रचनाओं में अनेक प्रकार के भाव पाए जाते हैं। यद्यपि वे खड़ी बोली के कवि थे, पर ब्रजभाषा व अवधी भाषा में भी कविताएँ गढ़ लेते थे। उनकी रचनाओं में कहीं प्रेम की सघनता है, कहीं आध्यात्मिकता तो कहीं विपन्नों के प्रति सहानुभूति व सम्वेदना, कहीं देश-प्रेम का जज्बा तो कहीं सामाजिक रूढ़ियों का विरोध व कही प्रकृति के प्रति झलकता अनुराग। इलाहाबाद में पत्थर तोड़ती महिला पर लिखी उनकी कविता आज भी सामाजिक यथार्थ का एक आईना है। उनका जोर वक्तव्य पर नहीं वरन चित्रण पर था, सड़क के किनारे पत्थर तोड़ती महिला का रेखांकन उनकी काव्य चेतना की सर्वोच्चता को दर्शाता है दृ

वह तोड़ती पत्थर

देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर

वह तोड़ती पत्थर

कोई न छायादार पेड़

वह जिसके तले बैठी हुयी स्वीकार

श्याम तन, भर बंधा यौवन

नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन

गुरु हथौड़ा हाथ

करती बार-बार प्रहार

सामने तरु-मालिका अट्टालिका प्राकार

निराला के काव्य में आध्यात्मिकता, दार्शनिकता, रहस्यवाद और जीवन के गूढ़ पक्षों की झलक मिलती है पर लोकमान्यता के आधार पर निराला ने विषयवस्तु में नये प्रतिमान स्थापित किये और समसामयिकता के पुट को भी खूब उभारा। अपनी पुत्री सरोज के असामायिक निधन और साहित्यकारों के एक गुट द्वारा अनवरत अनर्गल आलोचना किये जाने से निराला अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में मनोविक्षिप्त से हो गये थे। पुत्री के निधन पर शोक-सन्तप्त निराला सरोज-स्मृति में लिखते हैं-

मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल

युग वर्ष बाद जब हुयी विकल

दुख ही जीवन की कथा रही

क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।

## लोकप्रिय रचना

सन् 1916 ई. में शनिरालाश की अत्यधिक प्रसिद्ध और लोकप्रिय रचना शजुही की कलीश लिखी गयी। यह उनकी प्राप्त रचनाओं में पहली रचना है। यह उस कवि की रचना है, जिसने शसरस्वतीश और शमर्यादाश की फाइलों से हिन्दी सीखी, उन पत्रिकाओं के एक-एक वाक्य को संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी व्याकरण के सहारे समझने का

प्रयास किया। इस समय वे महिषादल में ही थे। श्रवीन्द्र कविता काननश के लिखने का समय यही है। सन् 1916 में इनका शहिन्दी-बंगला का तुलनात्मक व्याकरणश शसरस्वतीश में प्रकाशित हुआ।

## काव्य प्रतिभा को प्रकाश

एक सामान्य विवाद पर महिषादल की नौकरी छोड़कर वे घर वापस चले आये। कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले रामकृष्ण मिशन के पत्र शसमन्वयश में वे सन् 1922 में चले गये। शसमन्वयश के सम्पादन काल में उनके दार्शनिक विचारों के पुष्ट होने का बहुत ही अच्छा अवसर मिला। इस काल में जो दार्शनिक चेतना उनको प्राप्त हुई, उससे उनकी काव्यशक्ति और भी समृद्ध हुई। सन् 1923-24 ई. में महादेव बाबू ने उन्हें श्मतवालाश के सम्पादन मण्डल में बुला लिया। फिर तो काव्य प्रतिभा को प्रकाश में ले आने का सर्वाधिक श्रेय श्मतवालाश को ही है। श्मतवालाश में भी ये 2-3 वर्षों तक ही रह पाये। इस काल की लिखी गयी अधिकांश कविताएँ श्परिमलश में संगृहीत हैं।

## आर्थिक संकट का काल

सन् 1927-30 ई. तक वे बराबर अस्वस्थ रहे। फिर स्वेच्छा से गंगा पुस्तक माला का सम्पादन तथा शसुधाश में सम्पादकीय का लेखन करने लगे। सन् 1930 से 42 तक उनका अधिकांश समय लखनऊ में ही बीता। यह समय उनके घोर आर्थिक संकट का काल था। इस समय जीवकोपार्जन के लिए उन्हें जनता के लिए लिखना पड़ता था। सामान्य जनरुचि कथा साहित्य के अधिक अनुकूल होती है। उनके कहानी संग्रह शलिलीश, श्चतुरी चमारश, श्सुकुल की बीबीश, (1941 ई.) और सखी की कहानियाँ तथा श्अप्सराश, श्अलकाश, श्प्रभावतीश, (1946 ई.) श्निरुपमाश इत्यादि उपन्यास उनके अर्थ संकट के फलस्वरूप प्रणीत हुए। वे समय-समय पर फुटबॉल लेख भी लिखते रहे। इन लेखों का संग्रह श्प्रबन्ध पद्मश के नाम से इसी समय में प्रकाशित हुआ। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे जनरुचि के कारण अपने धरातल से उतर कर सामान्य भूमि पर आ गये। उनके काव्यगत प्रयोग चलते रहे। सन् 1936 ई. में स्वरताल युक्त उनके गीतों का संग्रह श्गीतिकाश नाम से प्रकाशित हुआ। दो वर्ष के बाद अर्थात् सन् 1938 ई. में उनका श्अनामिकाश काव्य संग्रह प्रकाश में आया। यह संग्रह सन् 1922 ई. में प्रकाशित श्अनामिकाश संग्रह से बिल्कुल भिन्न है। सन् 1938 ई. ही उनके अंतर्मुखी प्रबन्ध काव्य श्तुलसीदासश का भी प्रकाशन हुआ।

## गीत

निराला के गीत गायकों के गीतों की भाँति राग-रागनियों की रुढ़ियों से बँधे हुए नहीं हैं। उच्चारण का नया आधार लिये हुए सभी गीत एक अलग भूमि पर प्रतिष्ठित हैं। इनके स्वर, ताल और लय अंग्रेजी गीतों से प्रभावित हैं। पियानों पर गाये जाने वाले धार्मिक गीतों को झलक इन गीतों में मिलती है। इसलिए इन गीतों की गायन-पद्धति और भावविन्यास में पवित्रता का स्पष्ट संकेत मिलता है। यद्यपि श्गीतिकाश की मूल भावना शृंगारिक है, फिर भी बहुत से गीतों में माधुर्य भाव से आत्मनिवेदन किया गया है। जगह-जगह मनोरम प्रकृति-वर्णन तथा उत्कृष्ट देश-प्रेम का चित्रण भी मिलता है। इस संग्रह की एक बड़ी विशेषता यह भी है कि इसमें संगीतात्मकता के नाम पर काव्य पक्ष को कहीं पर भी विकृत नहीं होने दिया गया है।

## द्रष्टा कवि

सब मिलाकर श्निरालाश भारतीय संस्कृति के द्रष्टा कवि हैं-वे गलित रुढ़ियों के विरोधी तथा संस्कृति के युगानुरूप पक्षों के उदघाटक और पोषक रहे हैं। पर काव्य तथा जीवन में निरन्तर रुढ़ियों का मूलोच्छेद करते हुए इन्हें अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा। मध्यम श्रेणी में उत्पन्न होकर परिस्थितियों के घात-प्रतिघात से मोर्चा लेता हुआ आदर्श के लिए सब कुछ उत्सर्ग करने वाला महापुरुष जिस मानसिक स्थिति को पहुँचा, उसे बहुत से लोग व्यक्तित्व की अपूर्णता कहते हैं। पर जहाँ व्यक्ति के आदर्शों और सामाजिक हीनताओं में निरन्तर संघर्ष हो, वहाँ

व्यक्ति का ऐसी स्थिति में पड़ना स्वाभाविक ही है। हिन्दी की ओर से शनिरालाश को यह बलि देनी पड़ी। जागृत और उन्नतिशील साहित्य में ही ऐसी बलियाँ सम्भव हुआ करती हैं—प्रतिगामी और उद्देश्यहीन साहित्य में नहीं।

### निष्कर्ष

निराला हिन्दी में मुक्त छंद के लिये प्रसिद्ध हैं। वे स्थितियों के संश्लेश से कम से कम शब्दों द्वारा अधिक से अधिक भाव पक्ष प्रकट करते हैं। नाद-योजना का उनकी काव्यात्मकता में विशिष्ट स्थान है। यही कारण है कि उनकी कविता में कभी कभी दुरुहता आ जाती है।

निराला में प्रारंभ से ही छायावाद से साथ साथ सरल और बोलचाल की भाषा में जीवन के विषय-यथार्थ को अभिव्यक्त करने की प्रवृत्ति रही है। यह महत्व निराला को ही प्राप्त है कि नई हिन्दी कविता की सभी प्रवृत्तियों के कवि अपना संबंध निराला से जोड़ने में गौरव का अनुभव करते हैं। उनकी अधिकांश रचनाओं में भाषा तत्सम बहुल है और उनमें समासों की अधिकता है। परंतु कुछ प्रगतिवादी रचनायें आम बोलचाल की भाषा में भी काव्यबद्ध हुई हैं। इससे यह तो पता चलता ही है कि भाषा के विविध रूपों पर उनका समान अधिकार था।

### सन्दर्भ सूचि

- 1 डॉ. राकेश कुमार द्विवेदी, "आधुनिक काल में कविता और सवैया", पृष्ठ 351
- 2 सूर्यनारायण वर्मा, "छायावादी और भाववादी काव्य में प्रकृति चित्रण", पृष्ठ 24
- 3 श्रुतिकान्त पाण्डेय, "हिन्दी भाषा और इसकी शिक्षण विधियाँ हिन्दी भाषा और शिक्षण विधियों की परिचायक", पृष्ठ 37
- 4 रजनी कान्ता पांडेय, "कबीर एवं निराला के काव्य में विद्रोह चेतना", पृष्ठ 238